आकाशवाणी, गोरखपुर

दिनांक–15 जुलाई 2024 सान्ध्य समाचार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज ऊर्जा विभाग के मंत्री की उपस्थिति में प्रदेश में बिजली उत्पादन, पारेषण और वितरण की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए भविष्य के दृष्टिगत जारी प्रयासों की समीक्षा की। बैठक में उत्तर प्रदेश पॉवर कॉर्पोरेशन लिमिटेड के साथ–साथ सभी डिस्कॉम के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि बिजली की मांग तेजी से बढ़ रही है। वर्ष 2018–19 में एक दिन में सर्वाधिक बीस हजार बासठ मेगावॉट की मांग रही, जो इस सत्र में 13 जून को तीस हजार छः सौ अट्ठारह मेगावॉट तक पहुंच गई। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि मांग के अनुरूप पर्याप्त बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करायें। उन्होंने कहा कि हर घर बिजली–निर्बाध बिजली के संकल्प की पूर्ति में विद्युत पारेषण तंत्र को और बेहतर किया जाना आवश्यक है। नए सब स्टेशन स्थापित करने से पूर्व वहां की आवश्यकता का अध्ययन जरूर किया जाए। अगले पांच वर्ष की आवश्यकता के अनुरूप लक्ष्य निर्धारित करते हुए नए सब स्टेशनों की स्थापना कराई जाए।

श्री योगी ने कहा कि गांव हो या नगरीय क्षेत्र, ट्रांसफार्मर खराब होने पर उसे तत्काल दुरूस्त किया जाए। आवश्यकता पड़ने पर नया ट्रांसफार्मर लगाया जाए। ट्रांसफार्मर की मरम्मत करने वाली एजेंसियों के कार्यों का भी अवलोकन किया जाय और टोल फ्री नंबर व हेल्पलाइन नम्बर पर आने वाली हर कॉल अटेंड की जाए।

उन्होंने कहा कि उपभोक्ता की समस्या का समय से समाधान किया जाय। श्री योगी ने कहा कि बिजली कनेक्शन चार्ज तय करने को लेकर प्रायः लोगों में असंतुष्टि देखी गई है। यह आवश्यक है कि इसमें एकरूपता हो। इसके लिए नियमों में सुधार किया जाय। अनावश्यक इंफ्रास्ट्रक्चर चार्ज को कम किया जाए और आम जन की सुविधा और सहूलियत को प्राथमिकता दी जाय। मुख्यमंत्री ने कहा कि पॉवर कॉर्पोरेशन के सामने सबसे बड़ी चुनौती सही बिल और समय पर बिल उपलब्ध कराना है तथा सभी उपभोक्ताओं से बिल की राशि का संग्रह करना है। प्रत्येक दशा में यह सुनिश्चित किया जाए कि एक भी उपभोक्ता को गलत बिजली बिल न मिले और सभी को समय से बिल मिल जाए। उन्होंने कहा कि अधिकारी उपभोक्ताओं से संवाद बनाएं। श्री योगी ने कहा कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के प्रति लोगों में उत्साह है। अब तक 18 लाख से अधिक लोगों ने इस योजना से जुड़ने के लिए पंजीयन कराया है। उचित होगा कि इस योजना का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाय और ज्यादा से ज्यादा लोगों को योजना की जानकारी दी जाय। उन्होंने कहा कि अयोध्या के साथ–साथ सभी नगर निगमों को सोलर सिटी के रूप में विकसित करने के लिए आवश्यक कार्यवाही की जाए।

****

महाकुंभ दो हजार पच्चीस से पहले गंगा एक्सप्रेस–वे का काम पूरा होने के साथ ही इसे यातायात के लिये खोल दिया जायेगा। प्रदेश सरकार का लक्ष्य इकतीस दिसम्बर दो हजार चौबीस को इस एक्सप्रेस–वे के मुख्य कैरिज वे को पूरा करने का है जबकि अन्य कार्यों को पूरा करने के लिये नवम्बर दो हजार पच्चीस तक का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। मेरठ के बिजौली से प्रयागराज के जूडापुर दांदू तक पांच सौ चौरानबे किलोमीटर लम्बे इस एक्सप्रेस–वे से पश्चिमी यूपी और पूर्वी यूपी के बीच की दूरी और समय दोनों घट जायेगें। प्रदेश के बारह जिलों से होकर गुजरने वाला यह एक्सप्रेस–वे छत्तीस हजार दो सौ तीस करोड़ रूपये की लागत से बन रहा है। गंगा एक्सप्रेस–वे प्रदेश के पांच सौ अट्ठारह गांव से होकर गुजरेगा। शुरूआत में इसे छः लेन का बनाया जा रहा है, जिसे आगे चलकर आठ लेन का किया जाना है। इस एक्सप्रेस–वे पर चौदह बड़े ब्रिज, सात आरओबी और बत्तीस फ्लाइओवर बन रहे हैं। यही नहीं इस पर शाहजहांपुर के जलालाबाद के पास साढ़े तीन किलोमीटर लम्बी हवाई पट्टी भी होगी, जिस पर किसी भी आपास स्थिति में बड़े बोइंग विमान उतर सकेंगे। गंगा एक्सप्रेस–वे पर मेरठ और प्रयागराज में दो मुख्य जबकि अन्य स्थानों पर पन्द्रह रैम्प टोल प्लाजा होंगे। इस पर नौ जनसुविधा परिसरों की भी सुविधा होगी।

****

देश का पहला हाईड्रोजन चालित जलयान कल गाजीपुर से चलकर वाराणसी पहुंच गया। इसे वाराणसी के राल्हूपुर स्थित मल्टीमॉडल ट्रर्मिनल पर पार्क किया गया। इण्डियन वाटरवेज अथारिटी ऑफ इण्डिया के स्थानिय अधिकारियों ने एक दिन पूर्व ही मल्टीमॉडल ट्रर्मिनल का निरीक्षण किया था। सबकुछ सही पाये जाने पर जलयान को वहां पार्क कराया गया। इस जलयान को महाकुंभ के दौरान काशी से प्रयागराज के बीच चलाया जायेगा। इण्डिया वाटरवेज अथॅरिटी ऑफ इण्डिया के अधिकारियों के अनुसार जलयान के अन्दर के हिस्से में अभी कई काम होने हैं। सजावट और लाइटिंग पर काम किया जाना है। उन्होंने बताया कि जलयान के ईंधन की आपूर्ति के लिये वाराणसी में गंगा किनारे हाइड्रोजन प्लांट भी स्थापित किये जायेंगे। गंगा में चलाये जाने वाले इस जलयान में पचास लोगों के बैठने की व्यवस्था है। दो मंजिला यह जलयान लगभग अट्ठाइस मीटर लम्बा और पांच मीटर आठ सेंटीमीटर चौड़ा है। इसका कुल वजन लगभग बीस टन है और इसकी रफ्तार बीस से पच्चीस किलोमीटर प्रतिघंटे की है। इस जलयान का निर्माण कोच्चि शिपयार्ड में हुआ है। इसे कोच्चि से पहले कोलकाता लाया गया और फिर वहां के गंगा नदी के रास्ते वाराणसी लाया गया।

****